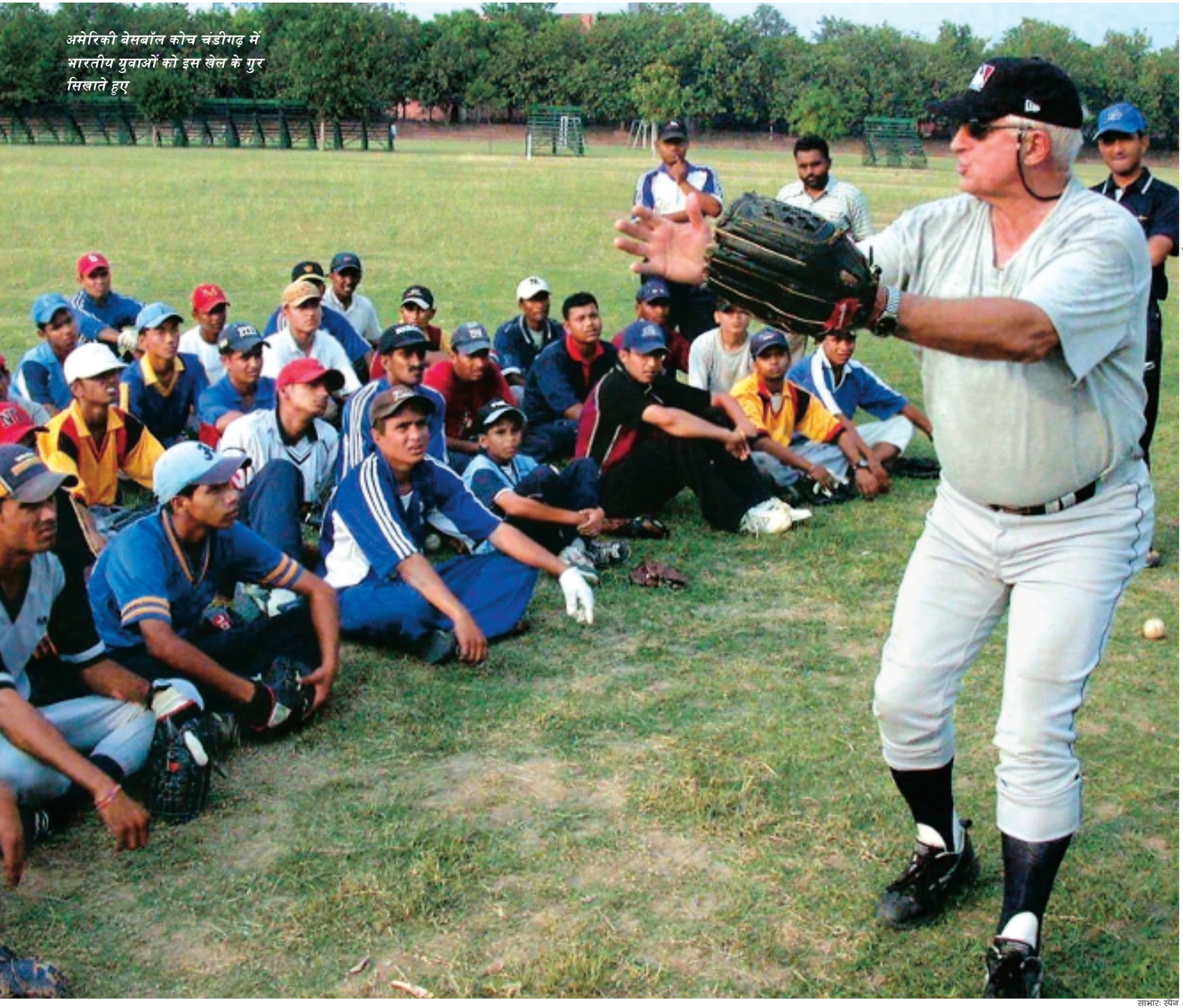

अमेरिकी बेसबॉल कोच चंडीगढ़ में भारतीय युवाओं को इस खेल के गुर सिखाते हुए

साभारः स्पेन

जनता के बीच आपसी संबंध

रिश्तों की मजबूत डोर

पंजाब के छोटे-से कस्बे मलेरकोटला का एक वजह से खासा नाम हुआ है। डिस्कवरी चैनल ने एक बार ''द लीजेंड ऑफ मलेरकोटला'' नाम से एक कार्यक्रम प्रसारित कर इस कस्बे के सांप्रदायिक सौहार्द की मजबूत परंपरा को रेखांकित किया था। यहां हिंदू, मुसलमान और सिख सदियों से हिल-मिलकर रहते आए हैं।

हाल ही में मलेरकोटला एक दूसरी वजह से चर्चा में आया और वह भी आधी दुनिया के उस पार अमेरिका के दक्षिण में लुइसियाना राज्य के एक घटनाक्रम से। उस दिन इस कस्बे का वस्तुतः हर स्त्री-पुरुष अपने-अपने घरों में टीवी पर नजर गड़ाए बैटन रॉग शहर के चुनावों के नतीजों का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। बमुश्किल ही कभी अमेरिका गए कस्बे के लोगों ने इस शहर का पहले कभी नाम तक नहीं सुना था। यह ऐतिहासिक घड़ी थी। भारतीय मूल के एक प्रतिभाशाली युवा अमेरिकी राजनेता बॉबी जिंदल लुइसियाना के गवर्नर का चुनाव लड़ रहे थे। वे मामूली अंतर से हार गए, लेकिन उन 24 घंटों के लिए सीएनएन मलेरकोटला के लोगों का सबसे पसंदीदा चैनल बन गया। साथ ही यह संदेश भी उभरकर आया कि भारत की ही तरह अमेरिका भी बहुजातीय और मिश्रित संस्कृतियों वाला एक जीवंत लोकतांत्रिक देश है। भारतीयों में यह एहसास गहरा हुआ कि अमेरिका का चेहरा सचमुच बदल रहा है। यह भी कि विविधता के इस नए तत्व के लगातार जुड़ने-से अमेरिका आंतरिक तौर पर और भी मजबूत और ताकतवर बन रहा है।

अमेरिका-भारत रिश्तों में बढ़ती इस गर्माहट के पीछे के किसी एक कारण को पकड़ना चाहें तो वह है दोनों देशों की जनता के बीच पनपे गहरे जज़्बाती संबंध। अब तो ये संबंध अप्रत्याशित ऊंचाइयों तक जा पहुंचे हैं। मसलन, सन् 2003 में अंतरिक्ष शटल कोलंबिया हादसे में नासा की अंतरिक्ष यात्री, हरियाणा में जन्मी कल्पना चावला की मौत पर भारतीयों और अमेरिकियों दोनों ने समान रूप से शोक मनाया। दोनों देशों के कई लोगों की वे आदर्श थीं और उनकी दुखद मृत्यु ने दोनों देशों के लोगों तथा उनके सपनों को और नजदीक

एपी

भारतीय मूल के अमेरिकी राजनेता बॉबी जिंदल लुइसियाना के गवर्नर पद के चुनाव अभियान के दौरान

ला खड़ा किया। यहां तक कि जिन दिनों अमेरिका-भारत संबंध अपने अच्छे दौर में नहीं थे तब भी जनता के बीच आपसी रिश्तों के विस्तार की प्रक्रिया जारी थी और कई सारे निजी अमेरिकी संगठन भारतीयों के साथ संबंध-विमर्श के जरिए वास्तविक साझेदारियां कायम करने में जुटे हुए थे।

अमेरिकी और भारतीय नागरिकों के बीच बढ़ते आपसी संबंधों को दो घटनाक्रमों के जरिए कहीं बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। दिसंबर 2003 में अमेरिकी सेना की प्रशांत क्षेत्र की कमान के कमांडर लेफ्टिनेंट-जनरल जेम्स कैंपबेल एक युवा सैनिक सार्जेंट उदय सिंह की अंत्येष्टि पर उन्हें पूरे सैनिक सम्मान के साथ अपनी श्रद्धांजलि देने चंडीगढ़ आए। भारतीय नागरिक उदय सिंह शिकागो में जाकर बसने के साथ अमेरिकी फौज में भर्ती हो गए थे। उनकी टुकड़ी के इराक में तैनात होने के फौरन बाद बगदाद के पास घात लगाकर किए गए एक हमले में वे शहीद हो गए। कैंपबेल के शब्द थे: ''दो महान लोकतांत्रिक देश इस साहसी युवा, घनिष्ठ साथी और भारत के सपूत की अपूरणीय क्षति पर शोकाकुल और श्रद्धावनत हैं। अमेरिकी फौज और अमेरिका के लोगों को उन पर फख्र है।'' उदय सिंह के पिता पी.एम. सिंह ने पत्रकारों से कहा: ''मेरा दृढ़ विश्वास है कि अपने पुत्र को खोने वाले पिता के रूप में उन पर जितना गर्व मुझे है, उतना ही हर भारतीय को होगा।''

दूसरी तस्वीर हाल ही की एक कामयाब फिल्म *कल हो न हो* में ब्रुकलिन ब्रिज पर एक पोज देते बॉलीवुड के चहेते अभिनेता शाहरुख खान की है। यह फिल्म कमोबेश न्यूयॉर्क सिटी की ही पृष्ठभूमि पर बनी है। फिल्म दरअसल, अमेरिकी लोगों में हिंदी फिल्मों के प्रति बढ़ती दिलचस्पी के रुझान को भुनाने की कोशिश है। इसी भारतीय तत्व के प्रति बढ़ती चाहत के सिलसिले को और आगे बढ़ाता है बॉलीवुड फिल्मों की पृष्ठभूमि पर आधारित ब्रॉडवे का म्यूज़िकल नाटक *बॉम्बे ड्रीम्ज़*। इसी तरह, मुंबई में जन्में फिल्मकार इस्माइल मर्चेंट और संगीतकार रविशंकर जैसे व्यक्तित्व भी इन अंतर-सांस्कृतिक संबंधों को और आगे ले जाते

हैं। रविशंकर की बेटियां तो दो संस्कृतियों के मेल का अनूठा उदाहरण हैं। ग्रैमी अवार्ड विजेता अमेरिकी गायिका नोरा जोंस और पारंपरिक भारतीय संगीतकार अनुष्का शंकर अपने पिता की ही तरह भारत और अमेरिका दोनों जगह समान लोकप्रिय हैं।

सच पूछिए तो दिनोदिन प्रगाढ़ होते इन रिश्तों की जमीन वे भारतीय तैयार कर रहे हैं, जो अपने ''अमेरिकी सपनों'' को पूरा करने के लिए ज्यादा-से-ज्यादा तादाद में अमेरिका का रुख कर रहे हैं। अमेरिका में बसे भारतीय मूल के 20 लाख लोगों की समृद्धि और सफलता की कहानियां उन्हें इसके लिए प्रेरित कर रही हैं। अमेरिका में विदेशों से आकर बसे वैध आप्रवासियों में मेक्सिको के नागरिकों के बाद अब सर्वाधिक संख्या भारतीयों की ही है। दो साल पहले चीनियों को पीछे छोड़ते हुए भारतीयों ने यह दर्जा हासिल किया है। भारतीय मूल के अमेरिकी स्थानीय संस्कृति, कारोबार, विज्ञान और टेक्नोलॉजी में असाधारण योगदान कर रहे हैं और राजनीति में भी उनकी भूमिका लगातार बढ़ रही है। भारत को अपने इन आप्रवासी भारतीयों (एनआरआई) पर गर्व है। विदेश मंत्रालय और फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा प्रायोजित सालाना ''प्रवासी भारतीय दिवस'' रूपी एक बड़ा अंतरराष्ट्रीय आयोजन भी इसी तथ्य को रेखांकित करता है। दोनों देशों के बीच रिश्तों को और मजबूत करने संबंधी उनके प्रयासों के बारे में जानने के लिए अमेरिकी दूतावास ने इस सालाना आयोजन के दौरान अमेरिकी एनआरआई के लिए एक स्वागत समारोह कर उन्हें सम्मानित किया।

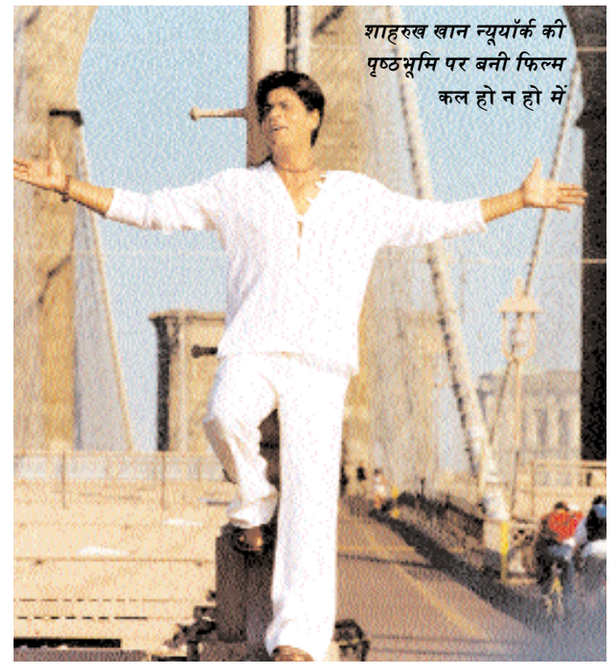

शाहरुख खान न्यूयॉर्क की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म कल हो न हो में

भारतीय जनमानस में भी अमेरिकी संस्कृति और अमेरिकी मूल्यों की स्वीकार्यता बढ़ रही है। अमेरिकी मूल्यों से प्रभावित एक युवा भारतीय उद्योगपति नवीन जिंदल ने भारतीय नागरिकों को अपने घरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अधिकार दिलाने के लिए कानूनी अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इंटरनेट और उपग्रह टीवी का विकास तो विस्फोटक रफ्तार से हुआ है, जिसके जरिए भारतीय सीएनबीसी, ब्लूमबर्ग, एमटीवी, एचबीओ, सीएनएन और ईएसपीएन देख सकते हैं। *फ्रेंड्स* और *जे लेनो* जैसे लोकप्रिय टीवी शो के बारे में तो बात करने की शायद जरूरत ही नहीं। इस पूरे मीडिया ने अमेरिका के बारे में जैसे एक नई खिड़की खोल दी है।

इस तरह लोगों के स्तर पर बने रिश्तों ने सांस्कृतिक फ्यूज़न तैयार किया है। अमेरिकी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव का सबसे जीवंत प्रतीक मैकडोनल्ड का महाराजा मैक और मैककरी मील्स के साथ अपने भारतीय रेस्तरांओं का स्थानीयकरण करना है। पीज्जा हट और डोमिनोज़ ने भी वही किया। इस तरह, इन खालिस अमेरिकी ब्रांडों ने अपना भारतीय चेहरा पा लिया है।

खानपान की चीजों का सांस्कृतिक विस्तार दोतरफा है। पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन जैसे ऊंचे ओहदे वाले प्रशंसकों की थोड़ी-बहुत मदद के जरिए भारतीय पकवान अमेरिकी थालियों में अपनी अहम जगह बना रहे हैं। देश भर में बड़े पैमाने पर खुले भारतीय रेस्तरां तो इसका एक संकेत मात्र हैं। पायल साहा ने जब न्यूयॉर्क में कोलकाता के मशहूर चिकन रोल्स का रेस्तरां खोला तो उन्हें अंदाज न था कि यह आज जितना कामयाब होगा। आज भारत में जितने लोकप्रिय रीबॉक फिटनेट सेंटर हैं उतनी ही लोकप्रिय अमेरिका में योग की कक्षाएं हैं। मैडोना के मेहंदी और बिंदी को चहुंओर प्रचारित करने, फिल्म *मॉलिन रॉग* में निकोल किडमैन

मरियम कारावेल्ला

पुलित्ज़र पुरस्कार विजेता नाट्यलेखिका सूज़न-लोरी पार्क्स भारतीय छात्रों के साथ बातचीत करते हुए

के हिंदी फिल्म संगीत पर अभिनय करने और कई अमेरिकी संगीतकारों तथा रॉक संगीत कलाकारों द्वारा भारतीय संगीत परंपराओं को गंभीरता से लेने के बाद ''विजातीय भारत'' अब धीरे-धीरे जानी-पहचानी-सी जगह बनता जा रहा है।

सांस्कृतिक सहयोग को प्रोत्साहन देना अमेरिकी दूतावास के पब्लिक अफेयर्स सेक्शन के कामकाज का एक अपरिहार्य अंग रहा है। इसका काम है नित नए सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रमों के जरिए आपसी समझ बढ़ाना, जिससे दोनों देशों के बीच व्यक्तियों और संस्थाओं के स्तर पर निजी, पेशेवर और संस्थागत संबंधों को मजबूत बनाने में मदद मिले। अमेरिका के जाज़ संगीतकारों से लेकर लोकगायक तक सभी नियमित कार्यक्रम करने और भारतीय संगीतकारों से जीवंत संपर्क साधने हेतु बराबर भारत आ रहे हैं। ऐसे सफल प्रस्तोताओं की लंबी कड़ी में ताजा नाम शीर्ष लोकगायक और गिटारवादक स्टीवन यंग का है। उन्होंने हाल ही में अपने एक महीने के भारत दौरे में जयपुर हेरिटेज इंटरनेशनल फेस्टिवल समेत कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया।

दूतावास ऐसे अमेरिकी वक्ताओं की भी मेजबानी करता है, जो आपसी हितों और चिंताओं से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर भारतीयों के साथ विचारों का साझा करते हैं। हाल के दिनों में आए अमेरिकी वक्ताओं ने व्यापार और निवेश, बौद्धिक संपदा अधिकार, पर्यावरण संरक्षण, न्यायिक सुधार, आतंकवाद, एचआईवी/एड्स जागरूकता, महिलाओं और बच्चों का अवैध व्यापार तथा बायोटेक्नोलॉजी जैसे मुद्दों पर अपने विचार बांटे। दोतरफा संवाद की प्रक्रिया मजबूत करने के लिए अमेरिकी राजनयिकों ने कई भारतीय संगठनों और संस्थानों का दौरा किया। अमेरिकी दूतावास ने आंतरिक संघर्षों के वैकल्पिक समाधान से लेकर बाल कल्याण जैसे विविध विषयों पर दोनों देशों के नागरिकों के बीच संवाद को प्रोत्साहित किया है। इसके पुस्तक दान और पुस्तक

सीड्स ऑफ पीस

एक पहल अमन के लिए

उप-महाद्वीप के स्कूली बच्चों के लिए आयोजित एक अनूठे ग्रीष्म शिविर ने भारत और पाकिस्तान में स्थायी शांति की उम्मीदों को बल दिया

मुंबई के 12 और लाहौर के 12 हाईस्कूली बच्चों के लिए सन् 2003 की गर्मी की छुट्टियां शानदार रहीं। पूरे छह हफ्ते उन्होंने माइने में साथ रहते, खाते, सोते और दक्षिण एशिया में शांति के भविष्य पर बहस करते हुए बिताए। छुट्टियां बीतते-बीतते एक दूसरे के गहरे दोस्त बन चुके ये बच्चे उप-महाद्वीप में शांति के समाधान के बारे में सोचते हुए भारत और पाकिस्तान के अपने घरों को लौट गए। उन गर्मियों में दोनों देशों के रिश्तों में ठहराव के बावजूद ये बच्चे अपने परिजनों को एक-दूसरे को समझने और इस नए रिश्ते को सदृढ़ बनाने के लिए वाघा सीमा तक लाने में कामयाब रहे। विश्व स्तर पर सराहे गए सीड्स ऑफ पीस कार्यक्रम ने दक्षिण एशिया में पहली बार यह आयोजन रखा था। यह अमेरिका और भारत के बीच नए रिश्तों की गुणवत्ता का ही परिचायक था कि ऐसे कार्यक्रम पाकिस्तान के साथ भारत की हाल में घोषित शांति पहल के लगभग साथ-साथ चल रहे थे।

लेखक-पत्रकार जॉन वालाक द्वारा 1993 में स्थापित सीड्स ऑफ पीस इज़राइल और फिलस्तीन के युवाओं को माइने में एक ग्रीष्म शिविर में एक साथ लाने के लिए शुरू किया गया। मध्य पूर्व के इन प्रतिभागियों की संख्या 1993 में 50 के मुकाबले सन् 2003 में 400 हो गई। कार्यक्रम की सफलता ने इसे दुनिया के दूसरे परस्पर संघर्षरत क्षेत्रों में भी चलाने को प्रेरित किया। सन् 1998 में यूनान और तुर्की साइप्रस के किशोरों ने इसमें हिस्सा लिया और सन् 2000 में बाल्कन क्षेत्र के किशोर इसकी सूची में आ जुड़े।

इज़राइल, फिलस्तीन, मिस्र, जॉर्डन, मोरक्को, ट्यूनीशिया, क़तर, यमन, साइप्रस, यूनान, तुर्की और बाल्कन क्षेत्र के अलावा भारत और पाकिस्तान के भी कुल करीब 1,500 किशोर अब तक इस कार्यक्रम से शिक्षित हो चुके हैं। इसके पीछे मकसद उन दो हलकों के किशोरों को साथ रखना है, जो अन्यथा एक-दूसरे को दुश्मन के रूप में देखते रहे हों। शिविर में बच्चे कुछ ऐसा ही प्रत्याशित व्यवहार करते हैं पर धीरे-धीरे वे अपने साझा अतीत को दूसरी तरफ से भी देखने लगते हैं। कार्यक्रम के अंत तक नफरत पिघलकर परस्पर समझ व शांति में तब्दील हो चुकी होती है।

माइने के सीड्स ऑफ पीस शिविर में भारत और पाकिस्तान के बच्चे

सुसी एगनबर्गर

वायने कारावेल्ला

अमेरिकी गायक स्टीवन यंग और राजस्थानी संगीतकार जयपुर में एक साथ कार्यक्रम पेश करते हुए

पुनर्प्रकाशन कार्यक्रम ने अमेरिकी सूचनाओं को भारत में एक बड़े दायरे तक पहुंचाया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण के दौर ने दोनों देशों के लोगों के बीच आपसी संपर्क की प्रक्रिया को और बल प्रदान किया है। अमेरिकी व्यापार जगत के लोग इस उभरते बाजार को खंगालने के लिए खासे उत्सुक रहे हैं और कारोबारी आवागमन तो इस कदर बढ़ चुका है कि रैडिसन, शेरेटन, मैरियट और हयात जैसे अमेरिकी होटलों की शृंखलाएं अपने कारोबार का विस्तार कर रही हैं और पर्यटन को बढ़ावा दे रही हैं। यह रुझान दोतरफा है। विदेशी विनिमय और विदेशी निवेश संबंधी नियमों में भारत सरकार के ढील देने से अब ज्यादा तादाद में भारतीय व्यवसायी और पर्यटक अमेरिका जाने लगे हैं। पहले ज्यादातर भारतीय अपने मित्र-दोस्तों या रिश्तेदारों से मिलने के लिए ही अमेरिका जाते थे। आज ज्यादातर पर्यटक अपने रिश्तेदारों वाले शहरों तक की ही यात्रा करने के बजाए पर्यटन एजेंसियों द्वारा आयोजित पैकेज के तहत अमेरिका जा रहे हैं।

इस तरह का आवागमन पिछले कुछेक वर्षों में तेजी से बढ़ा है। आज तो भारतीय अभिभावकों का कुछ दिन यहां रहना और कुछ दिन अमेरिका में अध्ययनरत या पेशारत बेटे-बेटियों के पास रहना उनकी जीवनचर्या में शुमार हो गया है। आज कारोबार, शादी-ब्याह से लेकर सिर्फ पर्यटन के लिए पूरे 5,00,000 भारतीय हर साल अमेरिका की यात्रा करते हैं। पर अमेरिका से आने वालों की तादाद इतनी ज्यादा नहीं है। इसकी कई वजहें हैं, जिसमें उड़ानों की गिनी-चुनी संख्या से लेकर भारत की बुनियादी ढांचे संबंधी समस्याओं जैसे पहलू शामिल हैं। फिर भी धीरे-धीरे यह धारणा बन रही है कि भारत पर्यटन की दृष्टि से एक आकर्षक जगह है। और जिस तरह व्यवसायी आपसी रिश्तों के जरिए अमेरिका-भारत के वाणिज्यिक संबंधों को नए मुकाम की ओर ले जा रहे हैं, उसी तरह अमेरिकी पर्यटक और घुमक्कड़ भी ''अजूबे भारत'' की खोज में संपर्क बनाने में मदद कर रहे हैं।

एक दूसरे स्तर पर, ''ज्ञान'' के शक्तिस्रोत के रूप में भारत के उभार का सीधा मतलब यह निकलकर आया है कि विदेश में नौकरी की चाह रखने वालों के लिए अमेरिका अब भी सबसे पसंदीदा जगह है। नतीजतन, अमेरिका से जारी होने वाले अस्थायी कार्य वीजा में से 50 फीसदी भारतीय हासिल कर रहे हैं। हालांकि, सन् 2003 में जारी होने वाले एच1-बी वीजा की संख्या घटकर 65,000 पर आ गई, लेकिन इसी दौरान भारत ने 28,000 पेशेवर अमेरिका भेजे, जबकि सन् 2002 में यह संख्या 25,200 थी। कंपनियों की ओर से एल-1 वीजा पर अमेरिका भेजे जाने वाले पेशेवरों की गिनती इसमें नहीं की गई है। जैसे-जैसे अमेरिकी कंपनियां भारत में आती जाएंगी, जाहिर है यह संख्या बढ़ती जाएगी। इसके बाद बारी आती है शिक्षकों और नर्सों की। इन क्षेत्रों में बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए ये पेशेवर अमेरिका का रुख कर रहे हैं।

अमेरिकी दूतावास के पब्लिक अफेयर्स सेक्शन द्वारा निकाली जाने वाली स्पैन पत्रिका 40 साल से अमेरिकी संस्कृति और समाज का आईना पेश कर रही है

इस तरह के आवागमन के अलावा भारत और अमेरिका के बीच सरकारी और गैर-सरकारी दोनों स्तरों पर एक-दूसरे के साथ होने वाला आदान-प्रदान बढ़ा है। दोनों के सजग लोकतांत्रिक देश होने के नाते दोनों देशों की राजनीतिक बिरादरी के बीच नजदीकी बढ़ना भी लाजिमी है। मसलन, शिकागो और नई दिल्ली के बीच ''सिस्टर सिटी'' संबंध कायम हुआ। शिकागो के महापौर रिचर्ड एम. डले ने दोनों शहरों के बीच कारोबारी और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ाने के मकसद से हाल में भारत यात्रा की और दिल्ली स्थित रामकृष्ण मिशन को एक चिकित्सा वैन भेंट की। डेनवर और चेन्नई शहरों के बीच भी ''सिस्टर सिटी'' रिश्ता है। अमेरिकन कौंसिल फॉर यंग पोलिटिकल लीडर्स (एसीवाईपीएल) भारत में सक्रिय है। यह एक-दूसरे के देश की यात्रा की खातिर राज्य, पंचायत और शहर स्तर पर 25-45 वर्ष आयु वर्ग के नेताओं का आदान-प्रदान आयोजित करने के लिए अमेरिकी दूतावास के साथ काम करती है और उन्हें दोनों देशों की भिन्न लोकतांत्रिक परंपराओं से रू-ब-रू कराती है। सन् 2003 में इस कार्यक्रम के तहत अमेरिका से युवा रिपब्लिकन और डेमोक्रेट नेताओं का एक दल भारत आया; दिल्ली में उनकी मेजबानी कांग्रेस पार्टी ने, हैदराबाद में तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) ने और गोवा में भारतीय जनता पार्टी ने की। एसीवाईपीएल और विचार विनिमय के ऐसे ही दूसरे कार्यक्रमों के जरिए दोनों तरफ के प्रतिभागी अंतरराष्ट्रीय नीतिगत मसलों और राजनैतिक प्रणालियों तथा प्रक्रियाओं से वाकिफ हुए।

अमेरिकी सीनेट और प्रतिनिधि सभा में पूरे 143 सांसदों का इंडिया कॉकस दोनों देशों के रिश्तों की बदली हुई तस्वीर की झलक ही तो पेश करता है, अमेरिकी विधि-निर्माताओं का यह सबसे बड़ा कॉकस है, जो सार्वजनिक तौर पर भारत के साथ संबंधों की बेहतरी के लिए प्रतिबद्ध है। असल में, ऐसे सांसदों के चुनाव क्षेत्रों में भारतीय मूल के नागरिकों की बहुतायत और उनका दबदबा है। अमेरिका की घरेलू

जाज़ ऐंबैसडर्स

संगीत राग के संदेशवाहक

पिछले दिनों अमेरिका से भारत को एक चीज का बड़े पैमाने पर 'निर्यात' हुआ है और वह है जाज़ ऐंबैसडर्स कार्यक्रम। भारत में खासा पसंद किया जाने वाला यह कार्यक्रम दोनों देशों के सांस्कृतिक कैलेंडर का अहम हिस्सा बन गया है।

संदीप दास मंजे हुए तबलावादक हैं। और ग्रैमी अवार्ड में मनोनयन के जरिए उन्होंने अपनी प्रतिभा साबित भी की है। ईरानी स्पाइक फिडलर केहान कल्होर और सितारवादक शुजाअत हुसैन खान के साथ जुगलबंदी करने वाले इस युवा तबलावादक में नामचीन होने के सारे गुण हैं। और यह बात कोई जाज़ ऐंबैसडर्स कंसर्ट की श्रृंखला से ही जाहिर नहीं हुई। पर दास ने जब तीन अन्य भारतीय संगीतकारों के साथ नई दिल्ली में एक अमेरिकी ग्रुप की प्रस्तुति में साझा किया तो उससे जरूर मदद मिली। उससे संगीत और श्रोता और समृद्ध हुए।

अमेरिकी विदेश मंत्रालय और वाशिंगटन डी. सी. के जॉन एफ. केनेडी सेंटर की ओर से प्रायोजित जाज़ ऐंबैसडर्स कार्यक्रम, जिसका अब छठा साल है, अमेरिका से भारत को आयात होने वाले सबसे पसंदीदा संगीत कार्यक्रमों में से है। इसके चाहने वालों में अटॉर्नी जनरल सोली सोराबजी–जो शायद भारत में इसके सबसे बड़े प्रशंसक हैं–से लेकर एक बुजुर्ग बंगाली सज्जन तक हैं, जो दक्षिण कोलकाता के दूरदराज के एक इलाके से अमेरिकन सेंटर तक अपने पसंदीदा जाज़ नंबर सुनने बरसों से आ रहे हैं।

विदेशों में अमेरिकी संगीत के प्रतिनिधित्व के लिए केनेडी सेंटर उम्दा जाज़ संगीतकारों की सात टोलियां चुनता है। उनके प्रदर्शनों में जाज़ गायन, जो अमेरिका का देसी कला-रूप है, प्रमुख है। जाज़ ऐंबैसडर्स भारतीय संगीतकारों के लिए देश भर में कक्षाएं लेते और लेक्चर देते हैं। सन् 2003 में जॉज़ कार्यशाला के लिए इंटरनेट से नाम मांगे गए। कहना न होगा, अर्जियों की बाढ़ आ गई। अमेरिकी संगीत का अगर रॉक, पॉप और कंट्री से दिली रिश्ता है तो भारतीयों को भी बुलंद आवाज वाली अमेरिका के दक्षिणी हिस्से की जाज़ धुनें भाती हैं।

रमेश जैन

नई दिल्ली में दिवाली के दौरान प्रस्तुति देते अमेरिकी जाज़ ऐंबैसडर्स

राजनीति में भारत के गहरे पैर जमा लेने की पक्की निशानी के तौर पर भारतीय मूल के अमेरिकियों ने सन् 2002 में औपचारिक तौर पर अमेरिका–भारत राजनैतिक मामलों की समिति (यूएसआईएनपीएसी) का गठन किया, जिसका मकसद अमेरिकी सांसदों को मदद, सूचनाएं देना तथा उनकी लॉबीइंग करना है। इसी तरह, भारत में करीब 80 सांसदों वाला भारत–अमेरिकी संसदीय मंच, इंडिया कॉकस का ही जोड़ीदार है। यह अमेरिका के साथ राजनैतिक संबंधों और संवाद को बढ़ावा देने की दिशा में सक्रिय है।

दरअसल, अमेरिका में भारतीय मूल के अमेरिकी समुदाय की जबरदस्त प्रगति ने दोनों देशों के लोगों के बीच आपसी तादात्म्य कायम करने की प्रक्रिया को एक नया विस्तार दिया है। उनकी तरक्की पर नजर डालिए: अमेरिका के जातीय समुदायों में भारतीय मूल के अमेरिकियों की प्रति व्यक्ति आय सबसे ज्यादा है। भारतीय मूल के 50,000 अमेरिकी डॉक्टर, अमेरिकी डॉक्टरों की कुल संख्या का 5 फीसदी हैं। अमेरिका के कुल 52,000 होटलों में से 22,000 भारतीय मूल के अमेरिकियों के स्वामित्व में या उनके संचालन में हैं। सिलिकॉन वैली के नए कारोबार का भी एक तिहाई हिस्सा इसी समुदाय की देन है। यूएसआईएनपीएसी के मुताबिक, सन् 2000 में अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के प्रचार अभियान में भारतीयों ने 70 लाख डॉलर का चंदा दिया और सन् 2004 के चुनाव में इसके बढ़कर एक करोड़ डॉलर हो जाने की संभावना है।

अमेरिकी दूतावास के कल्चरल अफेयर्स ऑफिस के इंटरनेशनल विजिटर्स प्रोग्राम ने भारतीय पेशेवरों की कई पीढ़ियों का अमेरिका से परिचय कराने के अलावा वहां के पेशेवरों से उनके मेल-मिलाप में मदद की है। लेकिन पिछले कुछ सालों में इस कार्यक्रम ने भी बदलते दोतरफा संबंधों के अनुरूप अपने को बदला है और अब विभिन्न विधाओं तथा भिन्न-भिन्न भाषाओं वाले भारतीय इसके तहत अमेरिका जा रहे हैं। मसलन, इंटरनेशनल विजिटर्स प्रोग्राम ने कई विधाओं के बहुत-से भारतीय मुसलमानों को पेशागत प्रवास पर अमेरिका भेजा है। मकसद, मुसलमान नेताओं और चिंतकों को अमेरिकी जीवन और संस्कृति से वाकिफ कराना भर नहीं था; यह भी दिखाना था कि अमेरिका इस्लाम विरोधी नहीं है। इसके अलावा, अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देना भी एक लक्ष्य है।

इस कार्यक्रम के तहत भेजे जाने वाले मदरसों के कई दलों में से पहला दल सन् 2003 में अमेरिका गया। अधिकारियों के शब्दों में, यह परिचय का अलग तरह का कार्यक्रम था। इसका मकसद इन मजहबी स्कूलों के नेताओं को अमेरिका की बहुविध स्कूल पद्धति से परिचित कराना था, जिसमें ईसाई, मुसलमान और यहूदी स्कूल शामिल हैं। अमेरिकी अधिकारी भी अपनी भारत यात्राओं के दौरान यहां के मुसलमान नेताओं से ज्यादा संवाद कर रहे हैं। दूसरी ओर, मुस्लिम विद्वानों ने अमेरिकी विश्वविद्यालयों के प्रवास के अलावा वहां के विद्वानों से मुलाकात की है, जिससे कि वे इन शिक्षण संस्थानों की कार्यपद्धति के बारे में जान सकें और अमेरिकी मुसलमानों की समृद्ध जीवन संस्कृति का जायजा ले सकें। आज इस्लाम अमेरिका में सबसे तेजी से फैल रहे मजहबों में से एक है। और अमेरिकी मूल्य कमोबेश इस्लामी मूल्यों से मेल खाते हैं।

अमेरिकी विद्वान और शोध केंद्र भी पहली बार भारत पर इस कदर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। मसलन, ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूट का दक्षिण एशिया कार्यक्रम भारतीय विषयों के सुपरिचित विद्वान डॉ. स्टीफन कोहेन की अगुआई में चल रहा है। इसी तरह, जॉन्स हॉपकिंस विश्वविद्यालय का स्कूल फॉर एडवांस्ड इंटरनेशनल स्टडीज़ (एसएआईएस) भी एक दूसरे भारतविद् डॉ. वाल्टर एंडरसन के नेतृत्व में दक्षिण एशिया अध्ययन केंद्र चला रहा है। ब्रुकिंग्स अब नई दिल्ली में ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन स्थित नए अमेरिकी अध्ययन केंद्र के साथ मिलकर काम कर रहा है और एस्पेन इंस्टीट्यूट ने भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के सहयोग से 'इंडिया प्रोग्राम' स्थापित किया है। स्पेशल ओलंपिक्स, द सेंटर फॉर सिविक एजूकेशन, द नेशनल प्रिज़र्वेशन ट्रस्ट, द अमेरिकन ज्युइश कमेटी, द एशिया सोसाइटी और द ईस्ट-वेस्ट सेंटर जैसे विविध आयामी गैर-लाभ वाले अमेरिकी समूहों के अलावा न्यूयॉर्क और शिकागो की विदेश संबंध परिषदों ने भी हाल के दिनों में अपने-अपने दल भारत भेजे हैं। द एशिया सोसाइटी की नई प्रमुख विशंका एन. देसाई भारतीय मूल की अमेरिकी हैं, जिन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय से बी.ए. किया है।

ऐंबैसडर्स फंड

रक्षा विरासत की

ऐंबैसडर्स फंड का गठन विभिन्न देशों को उनकी सांस्कृतिक विरासत को बचाने की कोशिशों में मदद देने के लिए किया गया है।

अमेरिकी दूतावास के ऐंबैसडर्स कल्चरल प्रिज़र्वेशन फंड ने अमेरिकी विशेषज्ञों की मदद से भारत के पांच राष्ट्रीय स्मारकों में विकलांगों के आने-जाने का प्रबंध किया है। इस कोष ने गुजरात के चांपानेर-पावागढ़ स्थित मेढी तलाव समुच्चय के संरक्षण की विशेष परियोजना को भी मदद की है। यह स्थल विश्व स्मारक कोष के 100 सबसे असुरक्षित ऐतिहासिक स्थलों की सूची में है। ऐंबैसडर्स फंड की स्थापना अमेरिकी कांग्रेस ने सन् 2001 में अल्प

एन ग्रीम्ज

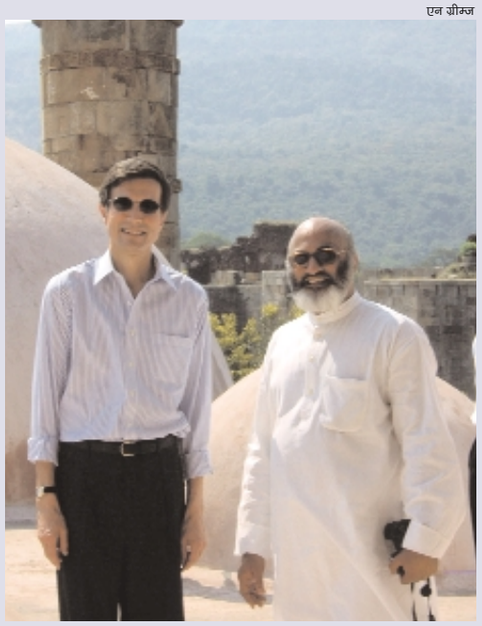

अमेरिकी दूतावास के रॉबर्ट ब्लेक चांपानेर-पावागढ़ में हेरिटेज ट्रस्ट के अध्यक्ष करण ग्रोवर के साथ

विकसित देशों को अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा में मदद देने के लिए की थी। कांग्रेस ने कहा थाः ''सांस्कृतिक संरक्षण का यह उपक्रम दूसरे देशों को अमेरिका का गैर-कारोबारी, गैर-राजनैतिक और गैर-फौजी चेहरा देखने का अवसर देता है।''

इस फंड का संचालन विदेश मंत्रालय करता है और चौतरफा बढ़ती मांग के मद्देनजर हर साल हर देश को एक ही अनुदान दिया जाता है।

भारतीय संगठनों ने भी इस तरह का आदान-प्रदान बढ़ाने के लिए अपने प्रतिनिधिमंडल अमेरिका भेजे। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) तो वाशिंगटन डी. सी. में एक सांस्कृतिक केंद्र ही खोलने की तैयारी में है।

दोनों देशों को और नजदीक लाने में स्वयंसेवी संगठन भी अपने तरीके से योगदान कर रहे हैं। अमेरिका स्थित अमेरिका-इंडिया फाउंडेशन (एआईएफ) ऐसे ही कई संगठनों में से एक है। यह अमेरिकी और भारतीय समुदायों और उनके संसाधनों के बीच एक सेतु स्थापित करके भारत में सामाजिक और आर्थिक बदलाव को गति देने के प्रति समर्पित है। गुजरात के भूकंप पीड़ितों के पुनर्वास के लिए अनुदान देने के अलावा अल्प सुविधायुक्त भारतीय स्कूलों में कंप्यूटर टेक्नोलॉजी लाने आदि के लिए धन देने संबंधी परियोजनाएं उसके काम में शामिल रही हैं। युवा अमेरिकियों खासकर कॉलेज के स्नातकों को साल भर तक भारत में ही रहकर काम करने के लिए लाकर यह तकनीकी कौशल, बौद्धिक संसाधन और सांस्कृतिक विनिमय का भी काम कर रहा है। इनमें से कुछ स्नातक तो अपनी भारतीय जड़ों के नाते यहां आए हैं। इन्हीं में से एक न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय से व्यवसाय प्रबंधन की युवा स्नातक श्रुति पटेल आजकल गुजरात में एक साल के प्रवास के तहत गांव-गांव जाकर ग्रामीणों को लर्निंग ऑन व्हील्स कार्यक्रम के तहत पढ़ा रही हैं। इसी तरह, अटलांटा के कलैवानी मुरुगेशन ने राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की पहल में हिस्सा लिया है, जिसके तहत वे आंध्र प्रदेश के बुनकरों को उनके उत्पाद बेहतर बनाने के अलावा बाजार में उन्हें अच्छे ढंग से पेश करने में मदद कर रहे हैं। सन् 2002 में भारत में रोटरी क्लबों की सदस्यता में करीब 18 फीसदी की वृद्धि के साथ पूरे 14,209 नए सदस्य जुड़े, जिससे नए रोटैरियनों के मामले में भारत दुनिया का अगुआ देश बन गया। भारत में रोटरी, देश को पोलियो से मुक्त करने के पल्स पोलियो अभियान जैसे स्वास्थ्य संबंधी कई अहम मसलों में सक्रिय रहा है।

इसके अलावा, नई दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नई स्थित अमेरिकन सेंटरों की ओर से शुरू किए गए कई कार्यक्रम भी हैं। लंबे समय से सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र माने जाने वाले इन सेंटरों ने अमेरिका और भारत के बीच संबंधों का

नोटः कृपया एआईएफ को इंडीकॉर्प्स पढ़ें।

एआईआरसी/कोलकाता

कोलकाता के इस केंद्र की ही तरह अमेरिकी इन्फॉर्मेशन रिसोर्स सेंटर भारत-अमेरिकी रिश्तों को मजबूत करने में मददगार बने हैं

कायाकल्प करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अमेरिकन इन्फॉर्मेशन रिसोर्स सेंटर्स (जिन्हें पहले यूएसआईएस लाइब्रेरियों के नाम से जाना जाता था) और अमेरिकी दूतावास की विस्तारित वेबसाइट (http://newdelhi.usembassy.gov) अब विभिन्न तरह के लोगों तक पहुंच रही है और उन्हें अमेरिकी नीति और समाज आदि के बारे में अधिकृत सूचनाएं समय पर प्रदान कर रही हैं।

परंतु पूरे समीकरण में खेलकूद की परंपराओं का उल्लेख किए बगैर अमेरिकी संस्कृति और दोनों देशों के लोगों के बीच जीवंत संबंधों की बात पूरी नहीं हो पाएगी। ईएसपीएन के सौजन्य से भारतीयों को अब नेशनल बास्केटबॉल एसोसिएशन (एनबीए) गेम्स के अलावा बेसबॉल, अमेरिकी फुटबॉल और गोल्फ वगैरह का भरपूर रोमांच देखने को मिल रहा है। पिछले दिनों अमेरिका के बेसबॉल कोच रिक डेल और टॉम डेडिन इस पसंदीदा अमेरिकी खेल से भारतीय युवाओं को परिचित और प्रशिक्षित करने के लिए एन्वाय प्रोग्राम के तहत भारत आए थे। इस लिहाज से यह भारतीय एमेच्योर बेसबॉल संघ के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। चंडीगढ़ में इन दोनों के प्रशिक्षण केंद्र पर 19 राज्यों के 80 खिलाड़ी पहुंचे। जिस देश में बेसबॉल को जानने-समझने वालों की तादाद गिनती पर गिनने लायक हो, वहां यह संख्या सचमुच चौंकाने वाली थी। डेल का कहना था कि ''भारत में क्रिकेट के माहौल से बेसबॉल के विकास को मदद मिलने वाली है क्योंकि दोनों में गेंद और बल्ले वाली मानसिकता काम करती है।'' इसी तरह, भारत में लोकप्रिय खेल धीरे-धीरे अमेरिका में भी जड़ें जमा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर माइक्रोसॉफ्ट सिएटल में एक क्रिकेट टीम की प्रायोजक है।

सार-संक्षेप यह कि सांस्कृतिक और राजनैतिक घनिष्ठता एक स्तर पर कारगर होने के बावजूद कहीं गहरे और जज़्बाती स्तर पर लोगों के बीच आपसी संपर्क ही वह तत्व है, जो इन दो देशों के बीच रिश्तों के तंतुओं को खुराक और मजबूती देता है। दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों के लोगों के बीच आपसी संपर्क अगर बढ़ नहीं रहा होता तो इतने क्षेत्रों में बढ़ते-रिश्तों में इस तरह की जीवंतता कतई देखने को न मिलती।